सार्क और बिम्सटेक का तुलनात्मक विश्लेषणः दक्षिण एवं दक्षिण–पूर्व एशिया में क्षेत्रीय सहयोग और चुनौतियाँ

प्राप्तिः 20.08.2026
स्वीकृतः 10.09.2026

72

देवेंद्र कुमार जायसवाल
शोधार्थी (राजनीति विज्ञान विभाग)
राजर्षि टंडन महिला महाविद्यालय
संघटक, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
प्रयागराज, उ0प्र0
ईमेलः *dj25760@gmail.com*

प्रो0 नीलिमा सिंह
विभागाध्यक्ष एवं प्रोफेसर
(राजनीति विज्ञान विभाग)
राजर्षि टंडन महिला महाविद्यालय
संघटक, इलाहाबाद विश्वविद्यालय
प्रयागराज, उ0प्र0

सारांश

यह अध्ययन दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संगठन (सार्क) और बहु–क्षेत्रीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग के लिए बंगाल की खाड़ी पहल (बिम्सटेक) का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करता है। दोनों संगठन एशिया में क्षेत्रीय सहयोग को बढ़ाने के उद्देश्य से स्थापित हुए, किंतु उनकी भौगोलिक संरचना, संस्थागत व्यवस्था, प्राथमिकताओं और कार्यक्षमता में महत्वपूर्ण अंतर है। 1985 में स्थापित सार्क का उद्देश्य दक्षिण एशिया के देशों के बीच सामाजिक–आर्थिक विकास, व्यापार, मानव विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य, संस्कृति और आपदा प्रबंधन में सहयोग बढ़ाना था। इसके विपरीत 1997 में स्थापित बिम्सटेक दक्षिण एशिया और दक्षिण–पूर्व एशिया को जोड़ने वाला अंतर–क्षेत्रीय मंच है, जिसका जोर व्यापार, संपर्क–सुविधा, समुद्री सहयोग, ऊर्जा, निवेश, तकनीकी सहयोग और क्षेत्रीय स्थिरता पर अधिक है।

अध्ययन में गुणात्मक और तुलनात्मक दृष्टिकोण अपनाते हुए द्वितीयक स्रोतों, आधिकारिक दस्तावेजों, रिपोर्टों तथा उपलब्ध शोध–सामग्री का विश्लेषण किया गया है। व्यापार, कनेक्टिविटी, ऊर्जा, सुरक्षा, आपदा प्रबंधन, तकनीकी सहयोग तथा संस्थागत निरंतरता को प्रमुख संकेतकों के रूप में लिया गया है। विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि सार्क की कार्यक्षमता भारत–पाकिस्तान तनाव, सर्वसम्मति आधारित निर्णय–प्रक्रिया, संस्थागत सीमाओं और कमजोर क्रियान्वयन से प्रभावित हुई है। इसके विपरीत बिम्सटेक ने कनेक्टिविटी और कार्यात्मक सहयोग के क्षेत्रों में अपेक्षाकृत अधिक सक्रियता दिखाई है। फिर भी बिम्सटेक को

**This article has been peer-reviewed by the Review Committee of Shodhmanthan.*

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i03.072

मुक्त व्यापार समझौते में धीमी प्रगति, वित्तीय संसाधनों की कमी और परियोजनाओं में विलंब जैसी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। अतः बिम्सटेक को सार्क का पूर्ण विकल्प मानने के बजाय दोनों को पूरक मंचों के रूप में देखना अधिक उपयोगी प्रतीत होता है।

मुख्य शब्द

सार्क, बिम्सटेक, क्षेत्रीय सहयोग, आर्थिक एकीकरण, कनेक्टिविटी, भू–राजनीतिक स्थिरता

परिचय

दक्षिण एशिया और बंगाल की खाड़ी का क्षेत्र भौगोलिक निकटता, ऐतिहासिक संबंधों तथा सामाजिक–सांस्कृतिक अंतर्संबंधों के कारण एक–दूसरे से गहराई से जुड़ा हुआ है। आर्थिक विकास, ऊर्जा सहयोग, संसाधनों के साझा उपयोग, सड़क एवं समुद्री संपर्क, व्यापार तथा सुरक्षा की आवश्यकताओं ने इस क्षेत्र में संस्थागत क्षेत्रीय सहयोग की आवश्यकता को बढ़ाया। इसी संदर्भ में 1985 में सार्क की स्थापना हुई। इसका उद्देश्य दक्षिण एशियाई देशों के बीच सहयोग को संस्थागत रूप देना और गरीबी, आर्थिक पिछड़ेपन, संसाधनों की कमी तथा सीमित संपर्क जैसी साझा समस्याओं के समाधान के लिए सामूहिक प्रयास करना था।

समय के साथ सार्क के सामने राजनीतिक तनाव, द्विपक्षीय विवाद, अविश्वास और संस्थागत बाधाएँ प्रमुख चुनौतियों के रूप में उभरीं। विशेष रूप से भारत और पाकिस्तान के बीच तनाव ने संगठन की निर्णय–प्रक्रिया को प्रभावित किया। सार्क में सर्वसम्मति की आवश्यकता होने के कारण किसी एक सदस्य की असहमति भी सामूहिक पहल को रोक सकती है। परिणामतः घोषणाओं और नीतिगत निर्णयों के बावजूद उनका व्यावहारिक क्रियान्वयन अपेक्षाकृत सीमित रहा।

बदलते भू–राजनीतिक परिवेश में 1997 में बिम्सटेक की स्थापना हुई। इसका उद्देश्य दक्षिण एशिया के साथ दक्षिण–पूर्व एशिया को जोड़ना था। म्यांमार और थाईलैंड जैसे दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों की भागीदारी ने इसे अंतर–क्षेत्रीय स्वरूप दिया। बिम्सटेक का एजेंडा व्यापार, निवेश, कनेक्टिविटी, ऊर्जा, समुद्री सहयोग, तकनीक, आपदा प्रबंधन और विकास परियोजनाओं पर केंद्रित है। भारत के लिए इसका महत्व विशेष रूप से इसलिए बढ़ा है क्योंकि यह 'Neighbourhood First' और 'Act East' जैसी विदेश नीति प्राथमिकताओं से जुड़ता है।

इस अध्ययन का उद्देश्य सार्क और बिम्सटेक की संरचना, उद्देश्य, कार्यप्रणाली, उपलब्धियों और सीमाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना है। साथ ही यह समझने का प्रयास किया गया है कि वर्तमान भू–राजनीतिक एवं आर्थिक परिवर्तनों के संदर्भ में कौन–सा मंच क्षेत्रीय सहयोग के लिए अधिक उपयोगी है और क्या बिम्सटेक सार्क का विकल्प बन सकता है अथवा दोनों का सह–अस्तित्व अधिक व्यवहारिक है।

उद्देश्य एवं कार्यप्रणाली

अध्ययन के प्रमुख उद्देश्य हैं (1) सार्क और बिम्सटेक के गठन, संरचना और उद्देश्यों की तुलना करनाय (2) वर्तमान राजनीतिक, आर्थिक, सामरिक और कनेक्टिविटी संबंधी परिवर्तनों के संदर्भ में दोनों की प्रासंगिकता का मूल्यांकन करना। (3) बिम्सटेक की उपलब्धियों और सीमाओं का

विशेष रूप से व्यापार, कनेक्टिविटी, निवेश और संस्थागत क्षमता के संदर्भ में परीक्षण करना; तथा (4) यह आकलन करना कि सार्क का पुनर्जीवन संभव है या बिम्सटेक अधिक व्यावहारिक एवं स्थायी क्षेत्रीय मंच के रूप में उभर रहा है।

अध्ययन में तुलनात्मक एवं गुणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। 1985 से 2025 तक के आधिकारिक दस्तावेजों, वार्षिक रिपोर्टों, शिखर सम्मेलनों के दस्तावेजों, नीति–पत्रों, अकादमिक लेखों, थिंक–टैंक अध्ययनों और उपलब्ध द्वितीयक आंकड़ों का उपयोग किया गया है। विश्व बैंक, एशियाई विकास बैंक, सार्क तथा बिम्सटेक सचिवालय से संबंधित उपलब्ध आंकड़ों और रिपोर्टों को विश्लेषण में शामिल किया गया है। व्यापार, कनेक्टिविटी, ऊर्जा, सुरक्षा, तकनीकी सहयोग और संस्थागत निरंतरता को तुलना के प्रमुख आधार बनाया गया है।

सार्क और बिम्सटेक की कार्यात्मक प्रगति

सार्क ने क्षेत्रीय सहयोग के लिए अनेक संस्थागत व्यवस्थाएँ और कार्यक्रम विकसित किए। व्यापार के क्षेत्र में दक्षिण एशियाई मुक्त व्यापार क्षेत्र (SAFTA) 2006 में लागू हुआ, किंतु अंतर–सार्क व्यापार अभी भी कुल व्यापार का लगभग 5 प्रतिशत ही है। इससे स्पष्ट है कि क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण की संभावनाएँ अभी पूरी तरह साकार नहीं हुई हैं। गैर–शुल्क बाधाएं कमजोर वित्तीय संपर्क, सीमित लॉजिस्टिक सुविधाएँ, भौगोलिक कठिनाइयाँ और राजनीतिक तनाव इसके प्रमुख अवरोध हैं।

कनेक्टिविटी के क्षेत्र में सार्क की सीमाएँ और स्पष्ट दिखाई देती हैं। 2014 में प्रस्तावित सार्क मोटर वाहन समझौता सदस्य देशों के बीच सड़क परिवहन को आसान बनाने के उद्देश्य से था, लेकिन भारत–पाकिस्तान तनाव और आपसी अविश्वास के कारण इसे लागू नहीं किया जा सका। सीमा–पार ट्रांजिट, वीजा प्रतिबंध और सीमित लॉजिस्टिक ढाँचे ने भी क्षेत्रीय संपर्क को कमजोर किया। ऊर्जा क्षेत्र में क्षेत्रीय विद्युत ग्रिड की योजनाएँ बनीं, लेकिन अपेक्षित गति नहीं मिल सकी। आपदा प्रबंधन और आतंकवाद–रोधी सहयोग के लिए संस्थागत प्रयास हुए पर राजनीतिक मतभेदों ने उनकी प्रभावशीलता को सीमित किया। इसी प्रकार साझा उपग्रह परियोजना पर सहमति न बनने के बाद भारत ने 2017 में दक्षिण एशिया उपग्रह को अकेले प्रक्षेपित किया।

बिम्सटेक ने कार्यात्मक सहयोग को अपेक्षाकृत अधिक प्राथमिकता दी है। व्यापार के क्षेत्र में अंतर–बिम्सटेक व्यापार का हिस्सा लगभग 7–8 प्रतिशत तक बताया गया है, हालांकि यह भी संभावित स्तर से कम है। 2004 में प्रस्तावित बिम्सटेक मुक्त व्यापार समझौता अभी तक पूर्ण रूप से लागू नहीं हुआ है। फिर भी व्यापार, निवेश और साझेदारी को गति देने के लिए गैर–शुल्क बाधाओं की समीक्षा और डिजिटल साधनों जैसे प्रयासों पर ध्यान दिया जा रहा है।

कनेक्टिविटी बिम्सटेक की प्रमुख प्राथमिकताओं में है। बिम्सटेक परिवहन कनेक्टिविटी मास्टर प्लान, समुद्री परिवहन सहयोग, बीबीआईएन जैसी उप–क्षेत्रीय पहल, त्रिपक्षीय राजमार्ग और कलादान बहु–मॉडल पारगमन परियोजना इस दिशा में महत्वपूर्ण हैं। कलादान परियोजना भारत के पूर्वी बंदरगाहों को म्यांमार के सिटवे बंदरगाह और आगे सड़क एवं नदी मार्ग से भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र से जोड़ने की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। हालांकि कई परियोजनाओं में विलंब है, फिर भी बिम्सटेक में भौतिक कनेक्टिविटी को स्पष्ट संस्थागत प्राथमिकता मिली है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i03.072

ऊर्जा सहयोग में भी दोनों संगठनों ने क्षेत्रीय संभावनाओं को स्वीकार किया है। सार्क में ऊर्जा व्यापार और ग्रिड इंटरकनेक्शन की योजनाएँ बनीं, किंतु व्यवहारिक प्रगति सीमित रही। बिम्सटेक ने ऊर्जा साझेदारी, निवेश और विकास तथा 'नीली अर्थव्यवस्था' को अपने सहयोग एजेंडे में शामिल किया है। क्षेत्रीय विद्युत ग्रिड अभी पूर्ण रूप से विकसित नहीं है, लेकिन भारत–बांग्लादेश और भारत–नेपाल जैसे द्विपक्षीय ऊर्जा सहयोग को व्यापक क्षेत्रीय सहयोग की दिशा में आधार के रूप में देखा जा सकता है।

सुरक्षा एवं आपदा प्रबंधन में भी अंतर दिखाई देता है। सार्क आपदा प्रबंधन केंद्र जैसी संस्थाएँ मौजूद हैं, लेकिन राजनीतिक मतभेदों और संसाधनों की कमी के कारण उनकी गतिविधियों का प्रभाव सीमित रहा। आतंकवाद–रोधी सहयोग भी भारत–पाकिस्तान मतभेदों से प्रभावित हुआ। बिम्सटेक ने समुद्री सुरक्षा, बंदरगाह सुरक्षा, आपूर्ति श्रृंखला, आपदा प्रबंधन तथा मौसम एवं जलवायु सहयोग को बढ़ाने पर ध्यान दिया है। 2025 के सहयोग एजेंडे में समुद्री सुरक्षा और आपदा पूर्व चेतावनी जैसे विषयों पर विशेष जोर दिखाई देता है।

विज्ञान एवं तकनीकी सहयोग में भी बिम्सटेक ने व्यावहारिक क्षेत्रों को प्राथमिकता दी है। सार्क के अंतर्गत साझा उपग्रह परियोजना राजनीतिक मतभेदों के कारण सफल नहीं हो सकी। बिम्सटेक में मौसम एवं जलवायु डेटा, समुद्री आपदा की पूर्व चेतावनी, समुद्री संसाधन, बंदरगाह विकास और लॉजिस्टिक नेटवर्क जैसे विषयों को सहयोग के क्षेत्र के रूप में आगे बढ़ाया जा रहा है।

समकालीन बहसः क्या बिम्सटेक सार्क का विकल्प है?

बिम्सटेक के बढ़ते महत्व के बावजूद उसे सार्क का सीधा विकल्प मानना उचित नहीं है। दोनों संगठनों का भौगोलिक दायरा और मूल उद्देश्य अलग हैं। सार्क दक्षिण एशिया की साझा ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पहचान पर आधारित व्यापक मंच है, जबकि बिम्सटेक दक्षिण एशिया और दक्षिण–पूर्व एशिया को जोड़ने वाला कार्यात्मक तथा अंतर–क्षेत्रीय मंच है। इसलिए दोनों की भूमिका पूरी तरह समान नहीं हो सकती।

एक मत यह है कि सार्क को पुनर्जीवित किया जाना चाहिए क्योंकि दक्षिण एशिया की दीर्घकालिक शांति, सामाजिक संपर्क और क्षेत्रीय पहचान के लिए एक व्यापक मंच आवश्यक है। भारत–पाकिस्तान संबंधों में तनाव के बावजूद क्षेत्रीय सहयोग को पूरी तरह समाप्त करना दीर्घकालिक समाधान नहीं माना जा सकता। सार्क के समर्थक 'डुअल–ट्रैक क्षेत्रवाद' की बात करते हैं, जिसमें राजनीतिक संवाद और विश्वास निर्माण के साथ व्यापार, संपर्क, आपदा प्रबंधन और अन्य कार्यात्मक सहयोग को आगे बढ़ाया जाए।

दूसरी ओर, बिम्सटेक समर्थकों का तर्क है कि वर्तमान आर्थिक और भू–राजनीतिक परिवेश में अधिक कार्यात्मक, परियोजना–आधारित और कनेक्टिविटी–केंद्रित सहयोग की आवश्यकता है। बिम्सटेक भारत की 'Act East' और 'Neighbourhood First' नीतियों के साथ जुड़ता है तथा बंगाल की खाड़ी, हिंद महासागर और दक्षिण–पूर्व एशिया के बीच संपर्क को बढ़ाने में उपयोगी है।

एक संतुलित दृष्टिकोण 'डूअल ट्रैक क्षेत्रवाद' का है। इसके अनुसार बिम्सटेक को आर्थिक, तकनीकी, समुद्री और कनेक्टिविटी सहयोग का प्रमुख मंच बनाया जा सकता है, जबकि सार्क

राजनीतिक संवाद, सामाजिक–सांस्कृतिक संपर्क और व्यापक दक्षिण एशियाई पहचान को बनाए रखने वाला मंच बना रह सकता है। इस दृष्टिकोण में दोनों के बीच प्रतिस्पर्धा के बजाय पूरकता पर बल दिया जाता है।

1. भारत की भूमिका और बिम्सटेक का रणनीतिक महत्त्व

भारत के लिए बिम्सटेक का महत्व उसकी 'Neighbourhood First' और 'Act East' नीतियों से जुड़ा है। संगठन के माध्यम से भारत दक्षिण एशिया और दक्षिण–पूर्व एशिया के बीच आर्थिक, समुद्री और रणनीतिक संपर्क को मजबूत कर सकता है। पूर्वोत्तर भारत को म्यांमार और आगे थाईलैंड से जोड़ने वाली कनेक्टिविटी परियोजनाएँ इस दृष्टि से विशेष महत्त्व रखती हैं। कलादान बहु–मॉडल पारगमन परियोजना तथा भारत–म्यांमार–थाईलैंड त्रिपक्षीय राजमार्ग जैसी पहले केवल परिवहन परियोजनाएँ नहीं हैं, बल्कि क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण की आधारभूमि भी हैं।

बंगाल की खाड़ी के बढ़ते सामरिक और आर्थिक महत्व ने समुद्री सुरक्षा, बंदरगाह विकास, ऊर्जा, आपूर्ति श्रृंखला और नीली अर्थव्यवस्था को भी क्षेत्रीय सहयोग का महत्त्वपूर्ण विषय बना दिया है। बिम्सटेक इन क्षेत्रों में सहयोग के लिए सार्क की तुलना में अधिक अनुकूल संरचना प्रदान करता है। फिर भी भारत के लिए यह आवश्यक है कि बिम्सटेक को केवल अपनी रणनीतिक प्राथमिकताओं का मंच न बनाकर सभी सदस्य देशों की विकास संबंधी आवश्यकताओं और हितों को समान महत्व देने वाला मंच बनाए।

इस संदर्भ में 'डूअल ट्रैक क्षेत्रवाद' (Dual-Track Regionalism) की अवधारणा अधिक व्यावहारिक दिखाई देती है। इसके अंतर्गत बिम्सटेक को आर्थिक एकीकरण, क्षेत्रीय कनेक्टिविटी, समुद्री सहयोग और रणनीतिक साझेदारी के अधिक सक्रिय मंच के रूप में विकसित किया जा सकता है, जबकि सार्क को दक्षिण एशिया में सामाजिक–सांस्कृतिक सहयोग, जन–से–जन संपर्क, विकासात्मक संवाद और क्षेत्रीय विश्वास–निर्माण के मंच के रूप में बनाए रखा जा सकता है। इस दृष्टिकोण में बिम्सटेक, सार्क का पूर्ण विकल्प नहीं बल्कि उसका पूरक होगा। इससे वर्तमान भू–राजनीतिक परिस्थितियों के अनुरूप क्षेत्रीय सहयोग के नए अवसरों का उपयोग किया जा सकेगा और दक्षिण एशिया की साझा क्षेत्रीय पहचान तथा सहयोग की संस्थागत संभावना भी बनी रहेगी।

तुलनात्मक विश्लेषण

कार्यात्मक तुलना से स्पष्ट होता है कि बिम्सटेक ने हाल के वर्षों में व्यापार, कनेक्टिविटी, तकनीकी सहयोग और संस्थागत बैठकों में सार्क की तुलना में अधिक निरंतरता दिखाई है। सार्क में 2016 के बाद शिखर सम्मेलन नहीं हो सका, जबकि बिम्सटेक में मंत्रिस्तरीय तथा तकनीकी बैठकों और परियोजनाओं पर अपेक्षाकृत अधिक निरंतरता रही है। बिम्सटेक चार्टर को औपचारिक रूप देने से इसकी संस्थागत पहचान भी मजबूत हुई है।

व्यापार में सार्क का SAFTA लागू होने के बावजूद अंतर–क्षेत्रीय व्यापार लगभग 5 प्रतिशत के निम्न स्तर पर है। बिम्सटेक का अंतर–क्षेत्रीय व्यापार लगभग 7–8 प्रतिशत बताया गया है, फिर भी मुक्त व्यापार समझौते में धीमी प्रगति इसकी बड़ी सीमा है। अतः केवल व्यापार प्रतिशत के आधार पर किसी संगठन को सफल मानना उचित नहीं होगा। संस्थागत क्रियान्वयन, व्यापार बाधाओं और परियोजनाओं की वास्तविक प्रगति को भी देखना आवश्यक है।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i03.072

कनेक्टिविटी में सार्क की मोटर वाहन समझौता पहल का लागू न होना उसकी राजनीतिक सीमाओं को दर्शाता है। इसके विपरीत बिम्सटेक परिवहन मास्टर प्लान, कलादान परियोजना, त्रिपक्षीय राजमार्ग और समुद्री परिवहन सहयोग जैसे ठोस प्रयासों पर आगे बढ़ रहा है। इसी कारण कनेक्टिविटी के क्षेत्र में बिम्सटेक अपेक्षाकृत अधिक कार्यात्मक दिखाई देता है।

संस्थागत स्तर पर सार्क की सर्वसम्मति आधारित प्रक्रिया और राजनीतिक तनाव निर्णयों के क्रियान्वयन को बाधित करते हैं। बिम्सटेक में भी संसाधन और क्षमता संबंधी समस्याएँ हैं, लेकिन तकनीकी कार्य समूहों और नियमित बैठकों के कारण निरंतरता अपेक्षाकृत अधिक है। इस प्रकार बिम्सटेक की वर्तमान कार्यक्षमता बेहतर दिखाई देती है, पर उसे अभी दीर्घकालिक सफलता के लिए संस्थागत क्षमता, वित्त और परियोजना क्रियान्वयन को मजबूत करना होगा।

कार्यात्मक तुलनात्मक सारणी

क्षेत्र	सार्क	बिम्सटेक
व्यापार	SAFTA लागू (2006); अंतर–सार्क व्यापार लगभग 5% राजनीतिक तनाव एवं गैर–शुल्क बाधाएँ	FTA वार्ताएँ जारी अंतर–बिम्सटेक व्यापार लगभग 7–8% व्यापार सहयोग अपेक्षाकृत गतिशील
कनेक्टिविटी	2014 का मोटर वाहन समझौता लागू नहीं; सीमा–पार संपर्क सीमित	परिवहन मास्टर प्लान, BBIN, त्रिपक्षीय राजमार्ग और कलादान जैसी पहल
ऊर्जा	ऊर्जा व्यापार एवं ग्रिड इंटरकनेक्शन की योजनाएँ, पर सीमित प्रगति	ऊर्जा साझेदारी और नीली अर्थव्यवस्था पर जोर; क्षेत्रीय ग्रिड अभी पूर्ण नहीं
सुरक्षा / आपदा	आपदा प्रबंधन के संस्थागत प्रयास, पर राजनीतिक मतभेदों से प्रभाव सीमित	समुद्री सुरक्षा, तटीय शिपिंग, आपदा प्रबंधन एवं मौसम–जलवायु सहयोग पर जोर
तकनीकी सहयोग	साझा उपग्रह पहल पर सहमति नहीं बनी भारत ने 2017 में अपना उपग्रह प्रक्षेपित किया	मौसम–जलवायु डेटा, समुद्री आपदा पूर्व चेतावनी एवं तकनीकी सहयोग
संस्थागत निरंतरता	2016 के बाद शिखर सम्मेलन की निष्क्रियता और राजनीतिक गतिरोध	तकनीकी कार्य समूह, मंत्रिस्तरीय बैठकें और चार्टर के बाद अपेक्षाकृत अधिक निरंतरता

प्रमाण–आधारित मूल्यांकन

सार्क के संदर्भ में तीन तथ्य इसकी सीमाओं को स्पष्ट करते हैं–2016 के बाद नियमित शिखर सम्मेलन का अभाव, भारत–पाकिस्तान तनाव का क्षेत्रीय सहयोग पर प्रभाव तथा 2014 के मोटर वाहन समझौते का लागू न हो पाना। इसी प्रकार साझा उपग्रह पहल पर सहमति न बनने के बाद भारत ने 2017 में दक्षिण एशिया उपग्रह को अपने स्तर पर प्रक्षेपित किया। ये उदाहरण बताते हैं कि राजनीतिक मतभेदों का प्रभाव आर्थिक, तकनीकी और कनेक्टिविटी सहयोग तक पहुँच गया।

बिम्सटेक के संदर्भ में चार संकेतक अपेक्षाकृत सकारात्मक हैं–चार्टर के माध्यम से संस्थागत पहचान का सुदृढ़ होना, FTA वार्ताओं की प्रगति, ग्रिड सहयोग की दिशा में व्यवहार्यता अध्ययन तथा

BBIN, त्रिपक्षीय राजमार्ग और कलादान जैसी कनेक्टिविटी पहलों में प्रगति। फिर भी FTA का पूर्ण क्रियान्वयन, परियोजनाओं में देरी और संसाधनों की कमी इसकी प्रमुख सीमाएँ बनी हुई हैं। अतः बिम्सटेक की वर्तमान सक्रियता को दीर्घकालिक सफलता का अंतिम प्रमाण नहीं माना जा सकता।

तुलनात्मक विश्लेषण से प्राप्त प्रमुख निष्कर्ष

तुलनात्मक अध्ययन से स्पष्ट होता है कि बिम्सटेक ने वर्तमान समय में व्यापार, कनेक्टिविटी, तकनीकी सहयोग और संस्थागत बैठकों की निरंतरता के क्षेत्र में सार्क की तुलना में अधिक सक्रियता दिखाई है। इसके विपरीत सार्क की कार्यक्षमता भारत–पाकिस्तान तनाव, सर्वसम्मति आधारित निर्णय–प्रक्रिया और संस्थागत निष्क्रियता से प्रभावित हुई है। अंतर–सार्क व्यापार का लगभग 5 प्रतिशत रहना तथा मोटर वाहन समझौते का लागू न हो पाना आर्थिक एकीकरण की सीमाओं को दर्शाता है। बिम्सटेक में अंतर क्षेत्रीय व्यापार लगभग 7–8 प्रतिशत बताया गया है, लेकिन मुक्त व्यापार समझौते का पूर्ण क्रियान्वयन अभी बाकी है।

कनेक्टिविटी में दोनों संगठनों का अंतर अधिक स्पष्ट है। सार्क में सड़क संपर्क और सीमा–पार परिवहन को आगे बढ़ाने की पहल राजनीतिक मतभेदों के कारण प्रभावित हुई, जबकि बिम्सटेक ने परिवहन मास्टर प्लान, BBIN, त्रिपक्षीय राजमार्ग और कलादान जैसी परियोजनाओं को अपने एजेंडे में स्थान दिया है। ऊर्जा के क्षेत्र में भी दोनों संगठनों ने संभावनाएँ स्वीकार की हैं पर क्षेत्रीय ग्रिड का पूर्ण विकास अभी शेष है। सुरक्षा और आपदा प्रबंधन में सार्क के संस्थागत प्रयासों की तुलना में बिम्सटेक ने समुद्री सुरक्षा, तटीय शिपिंग, मौसम–जलवायु सहयोग और आपदा पूर्व चेतावनी पर अधिक जोर दिया है।

इस तुलना से यह निष्कर्ष नहीं निकाला जाना चाहिए कि बिम्सटेक पूरी तरह सफल और सार्क पूरी तरह विफल है। बिम्सटेक अभी भी FTA, वित्तीय संसाधनों, परियोजना क्रियान्वयन और संस्थागत क्षमता की चुनौतियों से जूझ रहा है। दूसरी ओर सार्क का सबसे बड़ा योगदान दक्षिण एशिया की साझा पहचान और सामाजिक–सांस्कृतिक संपर्क के लिए एक व्यापक मंच उपलब्ध कराना है। इसलिए दोनों संगठनों की उपलब्धियों को उनके अलग–अलग उद्देश्यों और क्षेत्रीय दायरे के संदर्भ में देखना अधिक उचित होगा।

चुनौतियाँ और संभावनाएँ

सार्क की सबसे बड़ी चुनौती राजनीतिक अविश्वास और भारत–पाकिस्तान तनाव है। सर्वसम्मति आधारित निर्णय–प्रक्रिया, सीमित संस्थागत क्षमता, वित्तीय संसाधनों की कमी और घोषणाओं के कमजोर क्रियान्वयन ने इसकी प्रभावशीलता घटाई है। फिर भी दक्षिण एशिया की साझा ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विरासत, जन–से–जन संपर्क और साझा विकास की आवश्यकताएँ सार्क को पूरी तरह अप्रासंगिक नहीं होने देतीं। इसके पुनर्जीवन के लिए राजनीतिक संवाद, विश्वास निर्माण, कार्यात्मक सहयोग और संस्थागत सुधार आवश्यक हैं।

बिम्सटेक की चुनौतियाँ अलग प्रकार की हैं। मुक्त व्यापार समझौते में ठहराव, वित्तीय संसाधनों की कमी, कनेक्टिविटी परियोजनाओं में देरी और संस्थागत क्षमता की सीमाएँ इसकी गति को प्रभावित कर सकती हैं। साथ ही सदस्य देशों के बीच आर्थिक क्षमता और प्राथमिकताओं में अंतर

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i03.072

भी एक चुनौती है। इसलिए बिम्सटेक को केवल घोषणाओं तक सीमित न रखते हुए परियोजना–आधारित क्रियान्वयन, बेहतर वित्तीय व्यवस्था, व्यापार सुविधा और मजबूत सचिवालय की दिशा में आगे बढ़ना होगा।

संभावनाओं की दृष्टि से बंगाल की खाड़ी का बढ़ता सामरिक और आर्थिक महत्व बिम्सटेक को विशेष अवसर प्रदान करता है। समुद्री व्यापार, बंदरगाह, ऊर्जा, नीली अर्थव्यवस्था, आपदा प्रबंधन, डिजिटल कनेक्टिविटी और आपूर्ति श्रृंखला में सहयोग के माध्यम से संगठन क्षेत्रीय आर्थिक एकीकरण को बढ़ा सकता है। भारत के लिए यह पूर्वोत्तर भारत को दक्षिण–पूर्व एशिया से जोड़ने और 'Act East' नीति को व्यवहारिक रूप देने का माध्यम भी है।

सार्क के लिए सबसे बड़ी संभावना कार्यात्मक सहयोग और राजनीतिक संवाद को अलग–अलग गति से आगे बढ़ाने में है। यदि राजनीतिक विवादों को सभी सहयोग क्षेत्रों पर हावी होने से रोका जाए और व्यापार, स्वास्थ्य, शिक्षा, जलवायु तथा आपदा प्रबंधन जैसे गैर–विवादित विषयों पर सहयोग बढ़ाया जाए, तो संगठन की उपयोगिता पुनः बढ़ सकती है।

सार्क के सामने सबसे बड़ी चुनौती राजनीतिक अविश्वास और भारत–पाकिस्तान तनाव है। इसके अतिरिक्त सर्वसम्मति आधारित निर्णय–प्रक्रिया, सीमित वित्तीय संसाधन और कमजोर क्रियान्वयन ने इसकी संस्थागत क्षमता को प्रभावित किया है। फिर भी दक्षिण एशिया की साझा ऐतिहासिक, सामाजिक और सांस्कृतिक विरासत इसे पूरी तरह अप्रासंगिक नहीं होने देती। व्यापार, स्वास्थ्य, शिक्षा, संस्कृति, आपदा प्रबंधन और जन–से–जन संपर्क जैसे गैर–विवादित क्षेत्रों में सहयोग को पुनः सक्रिय करके सार्क की उपयोगिता बढ़ाई जा सकती है।

बिम्सटेक के सामने मुक्त व्यापार समझौते में धीमी प्रगति, कनेक्टिविटी परियोजनाओं में देरी, वित्तीय संसाधनों की कमी और सदस्य देशों की अलग–अलग आर्थिक क्षमताएँ प्रमुख चुनौतियाँ हैं। इसके बावजूद बंगाल की खाड़ी का बढ़ता सामरिक महत्व, समुद्री व्यापार, ऊर्जा, डिजिटल संपर्क, आपदा प्रबंधन और नीली अर्थव्यवस्था इसके लिए नई संभावनाएँ पैदा करते हैं। यदि परियोजना–आधारित सहयोग, व्यापार सुविधा और संस्थागत क्षमता को मजबूत किया जाए तो बिम्सटेक क्षेत्रीय एकीकरण में अधिक प्रभावी भूमिका निभा सकता है।

भविष्य के लिए 'दोहरी ट्रैक वाला क्षेत्रवाद' अधिक व्यावहारिक दिखाई देता है। इसमें बिम्सटेक आर्थिक, कनेक्टिविटी और रणनीतिक सहयोग का मंच बने, जबकि सार्क राजनीतिक संवाद, सामाजिक साझेदारी और दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय पहचान को बनाए रखे। इस प्रकार दोनों संस्थाओं को प्रतिस्पर्धी विकल्पों के बजाय पूरक मंचों के रूप में विकसित किया जा सकता है।

निष्कर्ष

दक्षिण एशिया और बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में हो रहे भू–राजनीतिक, आर्थिक और रणनीतिक परिवर्तनों के संदर्भ में सार्क और बिम्सटेक का तुलनात्मक विश्लेषण यह दर्शाता है कि यद्यपि दोनों संगठनों की प्रकृति, संरचना, कार्यक्षमता और उद्देश्यों में अंतर है, वे क्षेत्रीय सहयोग के समग्र ढाँचे में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। सार्क का आधार दक्षिण एशिया की सामाजिक– सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक समानताओं पर निर्भर था और इसका उद्देश्य क्षेत्रीय पहचान को मजबूत करना तथा

सामाजिक–आर्थिक उन्नति के लिए साझा नीति निर्माण करना था। हालांकि भारत और पाकिस्तान के बीच स्थायी तनाव, सर्वसम्मति आधारित व्यवस्था, संसाधनों की कमी और संस्थागत निष्क्रियता ने सार्क को 2016 के बाद लगभग निष्क्रिय कर दिया है। व्यापार, कनेक्टिविटी, ऊर्जा और सुरक्षा जैसे क्षेत्रों में अपेक्षित विकास की कमी इसकी प्रमुख कमजोरियों के रूप में सामने आई है।

इसके विपरीत, बिम्सटेक ने दक्षिण और दक्षिण–पूर्व एशिया को जोड़ने वाला एक 'इंटर–रीजनल' ढाँचा प्रस्तुत किया है, जो व्यापार, समुद्री सहयोग, कनेक्टिविटी, ऊर्जा, आपदा प्रबंधन और तकनीकी आदान–प्रदान पर केंद्रित है। भारत की 'Neighbourhood First' और 'Act East' नीतियों के अनुरूप बिम्सटेक ने अधिक प्रासंगिक भू–राजनीतिक मंच के रूप में अपनी पहचान बनाई है। परिवहन मास्टर प्लान, त्रिपक्षीय हाईवे, कलादान परियोजना, समुद्री परिवहन समझौता तथा मौसम–जलवायु सहयोग इसकी प्रमुख पहलों में हैं। फिर भी मुक्त व्यापार समझौते में ठहराव, वित्तीय संसाधनों की कमी, परियोजनाओं में देरी और संस्थागत क्षमता की कमियाँ इसकी दीर्घकालिक प्रभावशीलता को प्रभावित करती हैं।

इसलिए बिम्सटेक को सार्क का पूर्ण विकल्प मानना उचित नहीं है। सार्क दक्षिण एशियाई पहचान, सांस्कृतिक समानताओं और सामाजिक संवाद के लिए एक व्यापक आधार प्रदान करता है, जिसे बिम्सटेक पूरी तरह प्रतिस्थापित नहीं कर सकता। वर्तमान भू–राजनीतिक परिदृश्य में 'दोहरे ट्रैक वाला क्षेत्रवाद' अधिक उपयुक्त प्रतीत होता है। इसमें बिम्सटेक आर्थिक और रणनीतिक सहयोग का मंच बने, जबकि सार्क राजनीतिक संवाद, सामाजिक साझेदारी और क्षेत्रीय पहचान को बनाए रखने में अपनी भूमिका निभाए। इस प्रकार दोनों संगठनों का सह–अस्तित्व दक्षिण एशिया और बंगाल की खाड़ी क्षेत्र में समग्र विकास का आधार तैयार कर सकता है।

संदर्भ

1. Abbas, K. (2024, June 12). BIMSTEC cannot be a suitable alternative to SAARC. The Annapurna Express.
2. Acharya, N. (2019, June 7). Nepal: BIMSTEC can't be SAARC's substitute. The Times of India.
3. Asian Development Bank. (2022, April). BIMSTEC Master Plan for Transport Connectivity.
4. Basu Ray Chaudhury, A., & Banerjee, S. (2023, June 9). Driving connectivity: Bridging gaps in BIMSTEC's transportation Master Plan. Observer Research Foundation.
5. Bhardwaj, S. (2025, April 30). BIMSTEC: Dysfunctional regionalism, South Asia style. Institute of South Asian Studies, National University of Singapore.
6. Business Recorder. (2024, November 16). SAARC is no longer relevant.
7. Business Recorder. (2024, December 15). Intra-trade among SAARC countries remains in lowrange of 5pc.

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2026.v17i03.072

8. Business Today. (2024, July 12). BIMSTEC: How India is shoring up its eastern coast.
9. CivilsDaily. (2022). SAARC vs BIMSTEC.
10. Drishti IAS. (2025, April 7). Reviving regionalism through BIMSTEC.
11. ForeignPolicyNews.org. (2019, June). Effectiveness of regionalism in South Asia: A comparative study between SAARC and BIMSTEC.
12. Mahida, R. G. (2023–2024). BIMSTEC: Bay of Bengal Initiative for Multi-Sectoral Technical and Economic Cooperation: SWOT analysis from Indian perspectives. International Journal of Management, Public Policy and Research.
13. Ministry of External Affairs, Government of India. (n.d.). Kaladan Multi-Modal Transit Transport Project.
14. Mookherjee, P., Ansari, A. A., & Khatri, A. (2024). ASEAN-BIMSTEC synergy: Bringing together Global South forces. Observer Research Foundation.
15. Oli, K. P. (2019, June 1). BIMSTEC cannot replace SAARC. India Today.
16. Observer Research Foundation. (2025, February 4). Facilitating India-Myanmar trade through Sittwe Port.
17. Shrestha, N. K. (2024, April 3). Cannot accept BIMSTEC to replace SAARC. The Kathmandu Post.
18. The Business Standard. (2025, March 12). BIMSTEC's trade potential remains underutilised.
19. The Business Standard. (2025, March 23). From SAARC to BIMSTEC: The failure of regional cooperation in South Asia.
20. The Daily Star. (2025, March 13). Bangladesh imports over five times its exports to SAARC nations.
21. The Diplomat. (2025, March). Beyond terrorism: A brief history of SAARC's failures.